वृत्तपत्राचे नांव :- हिन्दी मिलाप
वृत्तपत्र प्रकाशन दिकाण :- हैदराबाद
वृत्तपत्र पान नं.:- 7
दिनांक :- 05 - 09 - 2007
कटिंग नंबर: .....

वैदिक शिक्षा सचेतना का जागरण होता है

– महर्षि महेश योगी

वैदिक शिक्षा से ही चेतना का जागरण होता है। स्कूलों और कॉलेजों में भावातीत ध्यान और यौगिक फ्लाइंग वाली योगचर्या को अनिवार्य बनाकर छात्रों को ज्ञानी बनाया जा सकता है। यदि बीस मिनट का भावातीत ध्यान शिक्षण पद्धति का अपरिहार्य अंग बना दिया जाए, तो जहाँ एक ओर छात्रों को न केवल बौद्धिक स्तर पर प्रकृति के नियमों की समझ रखने वाला, बल्कि स्वमेव उनके अनुसार अपना जीवन जीने वाला बनाया जा सकता है, वहीं दूसरी ओर इस योगचर्या के सामूहिक अभ्यास से उत्पन्न सतोगुणी प्रभाव से राष्ट्र को अजेय रखा जा सकता है।

शिक्षा के चार स्तर होते हैं-पहला व्यवहार का, दूसरा चिंतन का, तीसरा बौद्धिक विश्लेषण और चौथा विचारों के स्रोत आत्मचेतना में जगाने का। पहले तीन चरणों से व्यक्ति सूचनाओं का संग्रह और उनका विश्लेषण भर कर सकता है, लेकिन उसका समग्र प्राकृतिक नियमों से सम्बद्ध और उसकी सत्ता का अनुभव नहीं कर सकता। यह वैसे ही है, जैसे जल के बारे में पढ़कर यह तो जान लिया कि वह ऑक्सीजन और हाइड्रोजन का बना है, वह इतने तापमान पर उबलता या बर्फ बनता है या वह मनुष्य की प्यास बुझाने के लिए आवश्यक है, लेकिन इससे प्यास नहीं बुझती, स्नान नहीं होता। वैदिक शिक्षा विद्यार्थी को विषय की बौद्धिक समझ ही नहीं कराती, बल्कि उसका प्रत्यक्ष अनुभव भी कराती है। जल हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से मिलकर बना है, यह गीला है, ठंडा है या गर्म है, इसका बौद्धिक ज्ञान ही नहीं कराती, बल्कि व्यक्ति की प्यास भी बुझाती है।

वैदिक शिक्षा से जब आत्मचेतना में गोता लगाते हैं, तो न केवल जिसका अध्ययन कर रहे हैं, उसकी समझ व्यापक हो जाती है, बल्कि संकल्पमात्र से उसका अनुभव भी हो जाता है। इसलिये सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मानवीय बुद्धि के आधार पर प्रकृति के नियमों का टुकड़े-टुकड़े ज्ञान करने से आत्मचेतना के स्तर पर पूरा-का-पूरा ज्ञान प्राप्त करना कहीं अधिक सरल और आनन्ददायक है। वैदिक शिक्षा मनुष्य की चेतना में अखण्ड शांति और अनन्त क्रिया के संधि स्थल का जागरण करती है, जहाँ से उठा संकल्प स्वमेव पूरा हो जाता है। जीवन की मूल इस भावातीत सत्ता का अनुभव किए बिना ज्ञान केवल परिहास का विषय है। केवल वैदिक शिक्षा ही ऐसे शिक्षित व्यक्ति का निर्माण करने में सक्षम है, जिससे कोई गलती नहीं होती। जहाँ वैदिक शिक्षा के माध्यम से अध्ययन अध्यापन होता है, वहाँ मानवीय चेतना में गठित प्रकृति के सभी नियम एक साथ जागृत हो जाते हैं।

वैदिक शिक्षा से जब आत्मचेतना में गोता लगाते हैं, तो न केवल जिसका अध्ययन कर रहे हैं, उसकी समझ व्यापक हो जाती है, बल्कि संकल्पमात्र से उसका अनुभव भी हो जाता है। इसलिये सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मानवीय बुद्धि के आधार पर प्रकृति के नियमों का टुकड़े-टुकड़े ज्ञान करने से आत्मचेतना के स्तर पर पूरा-का-पूरा ज्ञान प्राप्त करना कहीं अधिक सरल और आनन्ददायक है।